''ज़्या आप परमेश्वर को स्वीकार्य आराधना करते हैं?''

I. ज़्या आप आराधना वैसे ही करते हैं जैसे परमेश्वर चाहता है ?

1. आराधना _____ को स्वीकार्य होनी चाहिए। 1 पतरस 2:5
2. आराधना _____ और _____से होनी चाहिए। यूहन्ना 4:24
3. सच्चाई _____ के द्वारा पहुंची। यूहन्ना 1:17
4. प्रेरितों को _____ सत्य का मार्ग बताया गया था। यूहन्ना 16:13
5. उन्होंने वे सब बातें सिखानी थीं जिनकी _____ ने आज्ञा दी थी। मज़ी 28:18-20

II. ज़्या आप वही करते हैं जो परमेश्वर को नहीं भाता ?

1. मनुष्यों की आज्ञाओं से की गई आराधना _____ है। मरकुस 7:7
2. _____ की रीतियों को मानने से परमेश्वर की आज्ञाएं टल जाती हैं। मरकुस 7:8
3. मनुष्य की रीतियों से परमेश्वर का वचन _____ जाता है। मरकुस 7:13
4. मनुष्यों की रीति हमें _____ सकती है, ज़्योंकि यह _____ के अनुसार नहीं। कुलुस्सियों 2:8
5. मनुष्यों की आज्ञाओं पर मन लगाने वाला _____ से भटक जाता है। तीतुस 1:14

III. आप किसका इस्तेमाल करते हैं मसीह की शिक्षा का या मनुष्यों की ?

मसीह की		मनुष्यों की
	लूका 18:1	
_____	1 तीमुथियुस 2:5	_____
	लूका 6:38	
_____	1 कुरिन्थियों 16:2	_____
	1 कुरिन्थियों 11:23-26	
_____	प्रेरितों 20:7	_____
_____	इफिसियों 5:19	_____
_____	2 तीमुथियुस 2:2	_____

IV. आपने वचन में जोड़ा है या निकाला ?

1. हमें वचन में _____ या _____ का अधिकार नहीं है। प्रकाशित. 22:18, 19
2. जो कोई _____ और _____ की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास _____ नहीं। 2 यूहन्ना 9

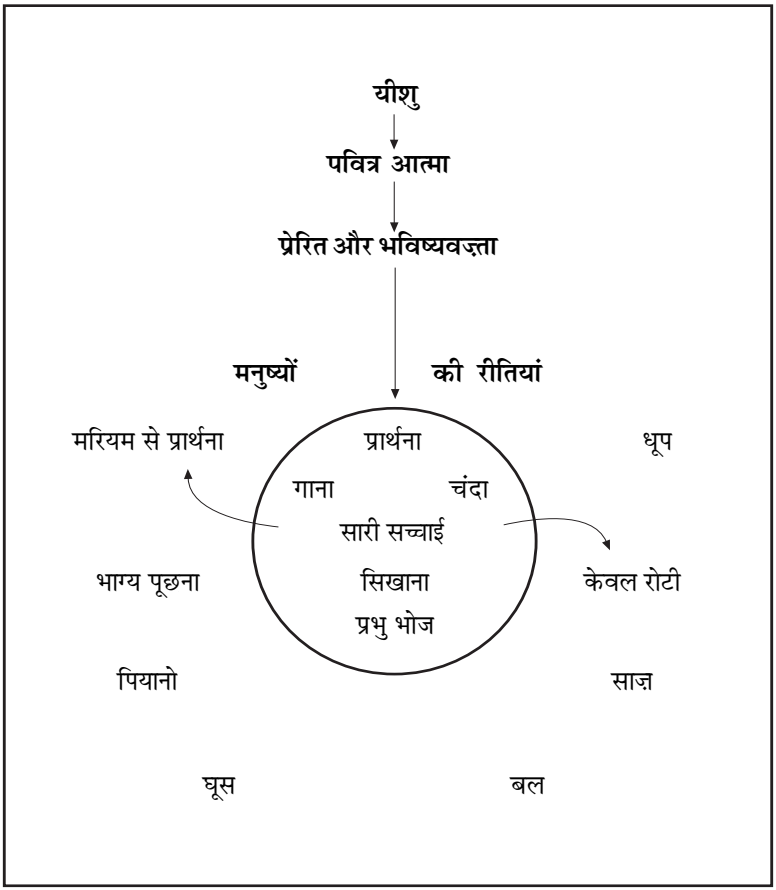
यीशु
पवित्र आत्मा
प्रेरित और भविष्यवक्ता
मनुष्यों की रीतियां
मरियम से प्रार्थना
प्रार्थना
धूप
गाना
चंदा
सारी सच्चाई
भाग्य पूछना
सिखाना
केवल रोटी
प्रभु भोज
पियानो
साज़
घूस
बल

अध्ययन शीट प्रस्तुत करना:

''ज़्या आप परमेश्वर को स्वीकार्य आराधना करते हैं?''

''ज़्या आप परमेश्वर को स्वीकार योग्य आराधना करते हैं?'' अध्ययन शीट का अध्ययन ''कलीसिया'' वाली अध्ययन शीट (पाठ 5) या ''संगठन'' वाली अध्ययन शीट (पाठ 6) के बाद किया जा सकता है। सिखाने वाले को चाहिए कि आरज़्भ करने के लिए इस अध्ययन शीट का इस्तेमाल *न* करे।

उद्देश्य

''आराधना'' वाली इस शीट का मुज़्य उद्देश्य उस आराधना पर चर्चा करना है जो यीशु अर्थात कलीसिया का सिर अपनी कलीसिया से चाहता है।

संक्षेप में पाठ

इस अध्ययन शीट में यह दिखाया गया है कि मनुष्य के मानने के लिए जो भी सच्चाई परमेश्वर चाहता है यीशु ने वह नये नियम के प्रेरितों और भविष्यवज़्ताओं को पवित्र आत्मा के द्वारा दे दी है, और उसे नये नियम में लिखा गया है। परमेश्वर की आराधना करते समय इसी सच्चाई को मानना चाहिए। मनुष्यों की बनाई हुई परज़्पराएं और उनकी आज्ञाओं को ठुकराना चाहिए और परमेश्वर की आराधना में केवल उस सच्चाई को मानना चाहिए जो हमें यीशु के द्वारा मिली है।

परिचय

[सिखाने वाला छात्र को इस पाठ के लिए तैयार करने के लिए आराधना, आराधना के उद्देश्य और आराधना में महत्व किसे दिया जाना चाहिए, पर चर्चा करके पाठ का परिचय दे सकता है।]

आराधना परमेश्वर की होनी है मनुष्य की नहीं। आराधना परमेश्वर अर्थात हमारे

सृष्टिकर्ज़ा का सज़्मान, महिमा, स्तुति और उपासना का एक प्रयास होना चाहिए। आराधना जीवन में परमेश्वर के साथ हमारे रोज़ चलने की ओर पीछे को देखते हुए उन बातों पर विचार होना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारे लिए की हैं। यह विचार करते हुए कि परमेश्वर ने हमारे लिए ज़्या किया है हमारे मन धन्यवाद और स्तुति के साथ परमेश्वर की ओर लगे होने चाहिए।

हमें यह पता होना चाहिए कि जो कुछ हम आराधना में कर रहे हैं उससे उसके प्रति हमारे समर्पण और सज़्मान का पता चलेगा। कहते हैं कि जॉर्ज वाशिंगटन ने अपने सैनिक अधिकारियों को उत्साहित करने के लिए अभद्र भाषा का इस्तेमाल करने वालों को डांटने का आदेश दिया। उसका कारण यह था कि जिस जीभ का इस्तेमाल परमेश्वर से सहायता के लिए पुकारने के लिए किया जाता है उसका इस्तेमाल उसके अपमान के लिए नहीं होना चाहिए। यदि वे ऐसी भाषा का इस्तेमाल करके जो परमेश्वर के लिए निंदनीय हो उसके प्रति अनादर दिखाते हैं तो उससे आशीष पाने की उज़्मीद कैसे कर सकते हैं। इसी प्रकार परमेश्वर की आराधना करने के हमारे प्रयास आराधना में ऐसी बातों का प्रयास करके मिले नहीं होने चाहिए जिनकी परमेश्वर ने इच्छा नहीं की थी।

I. परमेश्वर ज़्या चाहता है

1. ज़्या परमेश्वर ने इस बात का चयन कर लिया है कि आराधना में ज़्या इस्तेमाल होना चाहिए? परमेश्वर मनुष्य से आराधना में ज़्या करने की इच्छा करता है? [1 पतरस 2:5 पढ़ें।] स्वीकार्य आराधना *किसकी* होनी चाहिए [रिज़्त स्थान में ''परमेश्वर'' भरें।] प्रश्न यह नहीं है कि आराधना में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुएं लोगों को स्वीकार्य हैं या नहीं, ज़्योंकि आराधना मनुष्य की नहीं है। आराधना में हमें मनुष्य को नहीं बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा करनी चाहिए। जहां तक मनुष्य की बात है हम कुछ बहुत ही प्रभावशाली चीज़ें तैयार करने में सक्षम हैं, परन्तु उन पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है। आराधना में हमारा प्रयास परमेश्वर को प्रसन्न करने का होना चाहिए।

2. आराधना के सज़्बन्ध में यीशु ने ज़्या कहा था? पुराने नियम की आराधना के खत्म हो जाने के बाद यीशु के अनुयायियों को आराधना कैसे करनी चाहिए? [यूहन्ना 4:23, 24 पढ़ें।] मसीही लोगों को आराधना *कैसे* करनी चाहिए [रिज़्त स्थान में ''आत्मा'' और ''सच्चाई'' भरें।]

''आत्मा'' से यीशु का अभिप्राय अवश्य ही यह होगा कि आराधना में मनुष्य का मन होना आवश्यक है। आराधना की केवल बाहरी बातें करना और आत्मिक रूप में उसमें शामिल न होना काफी नहीं है। हो सकता है कि कोई ''मेरे यीशु, मैं तुझसे प्रेम करता हूं'' जैसा गीत गाते हुए भी अपनी नौकरी, मनोरंजन आदि के विचार मन में ला रहा हो और अपने मन से ''मेरे यीशु, मैं तुझसे प्रेम करता हूं'' न कह रहा हो, और इस कारण वह आराधना नहीं कर रहा हो। उसकी आराधना आत्मा से होनी आवश्यक है।

आराधना केवल *आत्मा* से ही नहीं, बल्कि *सच्चाई* से भी होनी आवश्यक है।

''आत्मा'' सार है तो ''सच्चाई'' इसका आकार है। कोई पीने के लिए पानी मांगे, तो उसके कहने का अभिप्राय वह बर्तन भी होता है जिसमें पानी होगा। कोई व्यक्ति बाग़ के हौज़ का नाला खोलकर उस व्यक्ति की ओर पानी भेजकर कह सकता है, ''पानी आ गया पी लो!'' इसमें *सार* तो होगा, परन्तु *आकार* गलत होगा। इसी प्रकार कोई आराधना में परमेश्वर तक आ सकता है, परन्तु उस आकार का इस्तेमाल करने में असफल हो सकता है जो परमेश्वर को भाता है।

3. ज़्या परमेश्वर ने सच्चाई प्रकट की है? यदि उसने सच्चाई प्रकट कर दी है तो यह कहां मिल सकती है? [यूहन्ना 1:17 पढ़ें।] परमेश्वर ने सच्चाई *किसके* द्वारा प्रकट की है? [रिक्त स्थान में ''यीशु मसीह'' भरें।] सच्चाई केवल यीशु में है (इफिसियों 4:21)। सच्चाई उस व्यवस्था में नहीं जो मूसा के द्वारा पहुंची है। व्यवस्था तो एक परछाई है (इब्रानियों 10:1)। अब जबकि सच्चाई आ चुकी है तो हम परछाई अर्थात व्यवस्था के अधीन नहीं हैं (गलातियों 3:24, 25; इफिसियों 2:14, 15; इब्रानियों 7:18, 19)। वे बातें जिनका इस्तेमाल आराधना में पुराने नियम के समय होता था उनका इस्तेमाल मसीही लोगों द्वारा तब तक नहीं किया जाता जब तक उनमें यीशु मसीह के द्वारा पहुंची सच्चाई न हो।

4. यीशु ने कितनी सच्चाई प्रकट की? [यूहन्ना 16:13 पढ़ें।] प्रेरितों को पवित्र आत्मा के द्वारा *कितनी* सच्चाई मिली? [रिक्त स्थान में ''सब'' भरें।] प्रेरितों को वह सब सत्य दिया गया था जो यीशु मनुष्य पर प्रकट करना चाहता है। यदि कोई ऐसी शिक्षा दी जा रही है जो प्रेरितों ने नहीं दी थी, तो यह उस सच्चाई का भाग नहीं है जो यीशु मसीह के द्वारा पहुंची थी।

[*पिछली ओर* सबसे ऊपर ''यीशु'' लिखें, फिर ''पवित्र आत्मा'', और फिर ''प्रेरित और भविष्यवक्ता।'' उसके नीचे एक चक्र बनाएं और उसमें ''सारी सच्चाई'' लिखें। देखें पृष्ठ 168।] कलीसिया के सिर यीशु ने नये नियम के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर सारी सच्चाई प्रकट कर दी है। यदि उन्होंने सिखाया कि किसी रीति का पालन किया जाना चाहिए तो वह यीशु की ओर से था और यीशु ने उस पर अपनी मोहर लगा दी (मत्ती 18:18) है।

5. यीशु ने स्वर्ग में जाने से थोड़ी देर पहले प्रेरितों को निर्देश दिया। उसने उन्हें सारी सृष्टि में सब जातियों में से चेले बनाने और उन्हें बपतिस्मा देने की आज्ञा दी, जिसके बाद उन्होंने उन सभी बातों को मानना सिखाना था जो यीशु ने उन्हें सिखाई थीं। उन्होंने नये मसीहियों को जो बातें माननी सिखानी थीं उनकी आज्ञा किसने दी थी? [मत्ती 28:20 पढ़ें।] उन्हें ये बातें सिखाने की आज्ञा *किसने* दी थी [रिक्त स्थान में ''यीशु'' भरें।]

यीशु का यह निर्देश व्यापक भी और विशिष्ट भी था। यीशु की शिक्षा से *कम* सिखाने, और यीशु द्वारा दी गई शिक्षा से *अधिक* सिखाने का अर्थ होना था कि यीशु की शिक्षा को नहीं माना जा रहा है। यह तो उन्हें वे बातें मानना सिखाना होना था जो उन्हें यीशु के अलावा किसी और ने सिखाई हों। यीशु की आज्ञा मानने के लिए, उनके लिए अनुयायियों को उन सब बातों को मानना और सिखाना आवश्यक था जो यीशु ने उन्हें बताई थीं, न उनसे कम और न उनसे ज़्यादा।

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है ? हमने सीखा है कि परमेश्वर को स्वीकार्य आराधना वही है जो आत्मा और सच्चाई से की जाती है। यीशु ने प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा सारी सच्चाई बता दी है। यीशु के चेलों को आराधना में उस सच्चाई का इस्तेमाल करना चाहिए जो उसने इन प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा दी थी।

II. परमेश्वर किसे ग्रहण नहीं करता

ज़्या परमेश्वर मनुष्य द्वारा आराधना में की गई किसी भी बात को स्वीकार कर लेता है ? ज़्या मनुष्य को अपनी इच्छा से आराधना में कुछ भी करने का अधिकार दिया गया है ?

1. उन बातों के विषय में ज़्या कहा जा सकता है जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने नहीं बल्कि मनुष्य ने दी है ? ज़्या परमेश्वर उस आराधना को स्वीकार कर लेगा जो परमेश्वर की नहीं बल्कि मनुष्यों की आज्ञाओं पर आधारित है ? [मरकुस 7:7 पढ़ें।] ज़्या परमेश्वर मनुष्य की आज्ञाओं के आधार पर आराधना को *महत्व* देता है ? [रिक्त स्थान में ''व्यर्थ'' भरें।] ''व्यर्थ'' का ज़्या अर्थ है ? ''व्यर्थ'' का अर्थ है निरर्थक, महत्वहीन, अयोग्य, फलहीन। मनुष्य की आज्ञा से इन बातों का इस्तेमाल करके परमेश्वर की आराधना करने की इच्छा करना परमेश्वर के सामने फल रहित है।

2. आराधना के केवल दो ही स्रोत हैं। आराधना में इस्तेमाल की जाने वाली बातें या तो परमेश्वर की ओर से हैं या मनुष्य की ओर से। जब कोई परमेश्वर द्वारा दी हुई आज्ञा को एक तरफ कर देता है, तो वह किसकी आज्ञा मान रहा होता है ? [मरकुस 7:8 पढ़ें।] मनुष्य जब परमेश्वर की बात नहीं मानता तो वह *किसकी* रीतियों के अनुसार चल रहा होता है ? [रिक्त स्थान में ''मनुष्यों'' भरें।]

यीशु मनुष्यों की रीतियों को मानने के लिए यहूदियों की सराहना नहीं कर रहा था। बल्कि वह मनुष्यों की रीतियों को मानने के लिए उनकी निंदा कर रहा था। परमेश्वर मनुष्य से यही अपेक्षा करता है कि वह मनुष्यों की रीतियों के बजाय उसकी इच्छा को मानें।

3. मनुष्य की रीतियों को मानने से परमेश्वर के वचन का ज़्या होता है ? [मरकुस 7:13 पढ़ें।] मनुष्यों की रीतियां परमेश्वर के वचन को *ज़्या* कर देती हैं ? [रिक्त स्थान में ''टल'' भरें।] मनुष्य की रीतियों से परमेश्वर का वचन टाल दिया जाता है।

समुद्र में जहाज से गिरकर डूब रहे आदमी की ओर, एक जीवन रक्षक फैंकने से, उसके प्राण बच सकते हैं। परन्तु, यदि कोई व्यक्ति उसकी ओर पत्थर फैंककर जीवन रक्षक को उसके पास पहुंचने से रोक ले, तो जिस जीवन रक्षक से उसके प्राण बच सकते थे वह व्यर्थ हो जाएगा। यीशु द्वारा प्रकट की गई सच्चाई को मानने के लिए मनुष्यों की परज़्पराओं द्वारा रुकावट डालने से ऐसा ही होता है।

4. मनुष्य की परज़्पराएं हमें और ज़्या कर सकती हैं ? [कुलुस्सियों 2:8 पढ़ें।] उनसे *ज़्या* हो सकता है ? [रिक्त स्थान में ''अहेर या लूट'' भरें।] उनसे ऐसा इसलिए होगा ज़्योंकि वे *किसकी* ओर से *नहीं* हैं ? [रिक्त स्थान में ''मसीह'' भरें।] हम जो कुछ करते हैं वह या तो मनुष्य की शिक्षाओं के अनुसार है या मसीह की शिक्षा के अनुसार। ज़्या

परमेश्वर हमें मनुष्यों की शिक्षा को मानने पर ग्रहण करेगा या मसीह की शिक्षा मानने पर? यदि हम जो कुछ करते हैं वह मनुष्यों की शिक्षा के अनुसार है, तो परमेश्वर हमें ठुकरा देगा। परन्तु यदि वह मसीह की शिक्षा के अनुसार है, तो परमेश्वर हमें स्वीकार कर लेगा।

[*पिछली ओर* चक्र के बाहर ''मनुष्यों की परम्पराएं'' लिखें। देखें पृष्ठ 168।] मनुष्यों की शिक्षाएं यीशु मसीह के अनुसार नहीं होती हैं। वे चक्र में उन बातों में नहीं हो सकती हैं जो परमेश्वर को स्वीकार्य हैं।

5. मनुष्यों की आज्ञा सिखाने वाले कौन हैं? [तीतुस 1:14 पढ़ें।] मनुष्यों की आज्ञाओं की शिक्षा देने वाले *किस से* फिर गए हैं? [रिक्त स्थान में ''सत्य'' भरें।] सत्य मसीह यीशु में है। जो लोग मनुष्यों की आज्ञाओं की शिक्षा देते हैं वे सत्य से भटक गए हैं, और इस कारण यीशु से फिर गए हैं।

इस भाग से हमने क्या सीखा? हमने सीखा कि परमेश्वर मनुष्य द्वारा आरम्भ की गई आराधना को ठुकरा देता है। आराधना में उन बातों का इस्तेमाल करना जो केवल मनुष्यों की परम्पराएं हैं परमेश्वर की नज़र में व्यर्थ है। हमारे पास दो ही विकल्प हैं, या तो सच्चाई को मानें जो यीशु मसीह के द्वारा पहुंची है या मनुष्य की रीतियों को। परमेश्वर उस बात को ग्रहण करता है जो यीशु द्वारा आई है परन्तु मनुष्यों द्वारा उपजी शिक्षा को वह ग्रहण नहीं करता।

III. मसीह से या मनुष्यों से

यह जानने के लिए कि कोई रीति परमेश्वर को स्वीकार्य है, हमारे लिए उसके मूल को जानना आवश्यक है। यदि जो कुछ हम करते हैं वह यीशु, प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की शिक्षा अर्थात नये नियम में है, तो हम जानते हैं कि परमेश्वर उसे स्वीकार करेगा, परन्तु यदि नये नियम में नहीं है, तो हम जानते हैं कि यह मनुष्य की ओर से है और हमें चाहिए कि उसे ठुकरा दें।

लूका 18:1 और 1 तीमुथियुस 2:5 में हमें *क्या* करने के लिए कहा गया है? [''मसीह की'' के नीचे पहले रिक्त स्थान में ''प्रार्थना'' भरें।] यदि हम परमेश्वर से प्रार्थना करें, तो क्या वह स्वीकार होगी? यदि हम हमारे मध्यस्थ के रूप में यीशु के द्वारा प्रार्थना करें, तो क्या वह स्वीकार होगी? हमें यह कैसे पता चलता है कि वह प्रार्थना स्वीकार हो जाएगी? हम जानते हैं कि यह परमेश्वर को स्वीकार्य है क्योंकि नये नियम में यह सिखाया गया है। पुराने नियम में लोग यीशु के नाम से प्रार्थना नहीं करते थे। क्या हमें भी वैसे ही करना चाहिए जैसे पुराने नियम के लोग करते थे?

प्रार्थना से जुड़ी मनुष्यों की कुछ रीतियां *कौन* सी हैं? कुछ लोग मरियम के द्वारा प्रार्थना करते हैं? कई लोग धूप जलाते हैं? कई लोग संतों के सामने प्रार्थना करते हैं? कई प्रार्थना में मनकों (रोज़री) का इस्तेमाल करते हैं? [''मनुष्यों से'' के नीचे मनुष्यों की इन बातों को लिखें।] क्या परमेश्वर इन परम्पराओं को ग्रहण करता है। क्या ये रीतियां परमेश्वर की ओर से हैं या मनुष्यों की ओर से? क्या पुराने नियम में लोग धूप का इस्तेमाल करते थे?

ज़्या हमें उनकी तरह अपनी प्रार्थना में धूप का इस्तेमाल करना चाहिए?

यदि हम इन रीतियों को मानने की इच्छा करते हैं, तो हमें ये रीतियां किसने सिखाईं? हमें देखना चाहिए कि ज़्या उनकी शिक्षा नये नियम में दी गई है। यदि नये नियम में उनका वर्णन नहीं है, तो वे मनुष्यों की परज़्पराएं अर्थात व्यर्थ हैं और उनसे दूर रहना चाहिए।

आराधना में और ज़्या होना चाहिए? [लूका 6:38; 1 कुरिन्थियों 16:2 पढ़ें।] यीशु ने हमें *ज़्या* करने की आज्ञा दी है? [''मसीह की'' के नीचे ''चंदा दें'' भरें।] ज़्या यह यीशु की ओर से है या मनुष्यों की ओर से? यदि यीशु की ओर से है, तो यह स्वीकार्य है, परन्तु यदि मनुष्यों की ओर से है तो हमें इससे दूर रहना चाहिए। हम जानते हैं कि चंदा परमेश्वर को स्वीकार्य है ज़्योंकि *चंदा देना* यीशु और प्रेरितों की ओर से सिखाया गया है।

अपनी कलीसियाओं की सहायता के लिए धन इकट्ठा करने के लिए मनुष्यों ने *ज़्या* बताया है [''मनुष्यों की'' के नीचे ''लॉटरियां, फुटकर सामान की बिक्री, दशमांश, आदि'' भरें।] ज़्या ये मसीह की ओर से हैं या मनुष्यों की ओर से? यदि ये मसीह की ओर से हैं तो उसकी शिक्षा में कहां मिलती हैं, परन्तु यदि नहीं, तो वे मनुष्यों की ओर से हैं इसलिए उन्हें छोड़ देना चाहिए। यीशु या प्रेरितों की शिक्षा में ये रीतियां नहीं मिलतीं। ज़्या पुराने नियम में दशमांश की आज्ञा है? ज़्या यीशु और प्रेरितों ने दशमांश की शिक्षा दी है? यदि दशमांश आज के समय के लिए है, तो इसकी आज्ञा यीशु की ओर से होनी चाहिए। यदि यह यीशु की ओर से है, तो उसकी शिक्षा में या प्रेरितों की शिक्षा में होनी चाहिए। ज़्योंकि यह यीशु की शिक्षा में नहीं है, इसलिए इसे मनुष्यों की आज्ञा मानकर छोड़ देना चाहिए।

मसीह की कलीसिया की और कौन सी रीति होनी चाहिए [1 कुरिन्थियों 11:23-26; प्रेरितों 20:7 पढ़ें।] यीशु ने अपने चेलों को *ज़्या* खाने की आज्ञा दी? [''मसीह की'' के नीचे ''प्रभु भोज'' भरें।] प्रभु भोज मसीह की ओर से है या मनुष्यों की ओर से? यदि यह मसीह की ओर से है, तो हमें इसे स्वीकार करना चाहिए, परन्तु यदि मनुष्यों की ओर से है तो हमें चाहिए कि इसे छोड़ दें। हमें रोटी में से खाना और दाख रस में से पीना तब तक जारी रखना चाहिए जब तक यीशु आ नहीं जाता। ज़्योंकि यीशु ने ही हमें उसे इस तरह याद करने के लिए कहा था।

मसीही लोग शनिवार अर्थात सब्त के दिन (मत्ती 28:1; मरकुस 16:1; लूका 22:1; यूहन्ना 20:1) नहीं बल्कि सप्ताह के पहले दिन (प्रेरितों 20:7) इकट्ठे होते थे। मसीही लोग प्रेरितों की अगुआई में चलते थे, इसलिए प्रभु भोज सप्ताह के पहले दिन लेना यीशु की ओर से ही है। जब हम सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज खाकर यीशु को याद करते हैं तो हम उसी रीति को मान रहे होते हैं जो यीशु की ओर से है, न कि मनुष्यों की ओर से।

मनुष्यों ने प्रभु भोज को ज़्या कर दिया है? कइयों ने तो दाख के रस को सुखा दिया है। कई लोग दाख के रस की जगह पानी का इस्तेमाल करने लगे हैं। कई साल में एक बार, छह माह में, तीन माह में, माह में एक या दो बार किसी दिन प्रभु भोज लेते हैं। [''मनुष्यों से'' के नीच ''पानी, एक किस्म और साल में एक बार भरें।''] ज़्या ये रीतियां मनुष्य की ओर से हैं या मसीह की ओर से? यदि ये मसीह की ओर से हैं तो यह यीशु और प्रेरितों की शिक्षा

में मिलनी चाहिए। यदि वे उनकी शिक्षा में नहीं हैं तो मनुष्यों की ओर से हैं और उन्हें नहीं मानना चाहिए। वे यीशु की शिक्षा में नहीं हैं इसलिए उन्हें मनुष्यों की शिक्षा मानकर ठुकरा देना चाहिए।

पुराने नियम के लोग सब्त (अर्थात शनिवार) के दिन मिसर की गुलामी से छूटने को याद करते हैं। ज़्या मसीही लोगों को इसी तरह सब्त का दिन मनाना चाहिए? ऐसी रीति यीशु की शिक्षा में नहीं मिलती इसलिए इसे नहीं मानना चाहिए।

प्रारम्भिक कलीसिया आराधना में और ज़्या करती थी? [इफिसियों 5:19 पढ़ें।] वे लोग *ज़्या* करते थे [''मसीह की'' के नीचे ''गीत'' भरें।] मसीही लोगों को गाने का निर्देश था।

परमेश्वर की आराधना में गाने के अलावा मनुष्यों ने इसके साथ और ज़्या शामिल कर लिया है? [''मनुष्यों की'' के नीचे ''पियानो, हारमोनियम, गिटार आदि'' भरें।] यदि आराधना में इन चीज़ों का इस्तेमाल करना था, तो इनका उल्लेख यीशु और प्रेरितों की शिक्षा में होना चाहिए। ये यीशु की शिक्षा में नहीं हैं, इसलिए मनुष्यों की ओर से हैं और इन्हें नहीं माना जाना चाहिए।

ज़्या पुराने नियम की आराधना में गाने के साथ साज़ों का इस्तेमाल होता था? मन्दिर में आराधना के लिए उनका इस्तेमाल होता था। ज़्या मसीही लोगों को आराधना में उन चीज़ों का इस्तेमाल करना चाहिए जो पुराने नियम की आराधना में होती थीं? मसीही लोगों को वही बातें करनी चाहिए जिसकी आज्ञा यीशु ने दी है। सो परमेश्वर की आराधना में गाने के साथ साज़ का इस्तेमाल करने से पहले उन्हें यह देखना चाहिए कि ज़्या यीशु की शिक्षा में उनका इस्तेमाल करने का निर्देश है। यीशु और प्रेरितों की शिक्षा में इनका उल्लेख *नहीं* है इसलिए मनुष्यों की शिक्षा होने के कारण उन्हें नहीं मानना चाहिए। नये नियम में संगीत की केवल गाने की किस्म की शिक्षा और रीति ही मिलती है, सो आज आराधना में केवल गाने का ही इस्तेमाल होना चाहिए।

नये नियम में और ज़्या रीति सिखाई गई है? उन्हें और ज़्या करने का निर्देश था? [2 तीमुथियुस 2:2] उन्होंने *ज़्या* करना था? [''मसीह की'' के नीचे ''सिखाएं'' भरें।] अपने लोगों को खींचने और उन्हें निर्देश देने का परमेश्वर का ढंग शिक्षा देना है।

मनुष्यों ने *ज़्या* किया है? [''मनुष्यों की'' के नीचे ''घूस, बल, मनोरंजन'' भरें।] यीशु की शिक्षाओं को मानने के लिए लोगों को लाने के ऐसे ढंग यीशु और प्रेरितों की शिक्षा से बाहर हैं। ज़्योंकि ये ढंग उनकी शिक्षा में नहीं मिलते, इसलिए यह स्पष्ट है कि ऐसी रीतियां मनुष्यों की ओर से हैं और उनसे दूर रहना चाहिए। इतिहास बताता है कि लोगों ने मूर्तिपूजकों को यीशु के पीछे लाने के लिए धन दिया और अलग तरह की घूस या सेना का भी इस्तेमाल किया है। लोगों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए मनोरंजन भी मनुष्यों का एक और ढंग है। यीशु के पास आने और उसके पीछे चलने वाले लोग उसकी शिक्षा को ही मानते हैं (यूहन्ना 6:45)। यह यीशु की ओर से है।

[*पिछली ओर* चक्र के अन्दर, ''प्रार्थना,'' ''चंदा देना,'' ''प्रभु भोज,'' ''गाना,''

''सिखाना'' भरें। ''मनुष्यों की परज़्पराएं'' के नीचे और चक्र के बाहर, ''मरियम से प्रार्थना,'' ''धूप,'' ''लॉटरियां,'' ''केवल रोटी,'' ''पियानो,'' ''हारमोनियम,'' ''घूस,'' ''बल'' लिखें। देखिए पृष्ठ 168।]

इस भाग में हमने ज़्या सीखा? हमने सीखा कि जो लोग सच्चाई को मानना चाहते हैं जो यीशु ने प्रकट की है उन्हें केवल उन्हीं बातों को मानना चाहिए जो यीशु ने सिखाई हैं। वे उन बातों को करके परमेश्वर की आराधना नहीं करना चाहते जो मनुष्य ने आरज़्भ की थी। वे चंदा देंगे, प्रार्थना करेंगे, प्रभु भोज में भाग लेंगे, और सिखाएंगे। वे उन बातों को शामिल *नहीं* करेंगे जो यीशु की ओर से नहीं हैं।

IV. जोड़ना और घटाना

ज़्या आप परमेश्वर की आराधना वैसे ही करना चाहते हैं जैसे यीशु ने हमें करने के लिए कहा है? ज़्या आप मसीही आराधना में उन बातों को शामिल करके आराधना करना चाहते हैं जो मनुष्यों ने आरज़्भ कीं?

1. हमें ज़्या *नहीं* करना चाहिए? [प्रकाशित. 22:18, 19 पढ़ें।] यीशु ने उनको श्राप दिया जो *ज़्या करते* हैं? [रिज़्त स्थान में ''जोड़ने'' और ''घटाने'' भरें।] यह वाज़्य प्रकाशितवाज़्य की पुस्तक के सज़्बन्ध में है। इसे माना जाना चाहिए। प्रश्न यह है कि ज़्या परमेश्वर प्रकाशितवाज़्य की पुस्तक के अलावा बाइबल की दूसरी पुस्तकों को महत्व देता है या नहीं? ज़्या परमेश्वर यह चाहता है कि हम प्रकाशितवाज़्य की पुस्तक में कोई बदलाव न करें, परन्तु बाइबल की दूसरी पुस्तकों को बदलने पर उसे कोई फर्क नहीं पड़ता? निश्चय ही परमेश्वर बाइबल की सभी पुस्तकों को एक समान महत्व देता है। ऐसी प्रतिज्ञा बाइबल की शेष शिक्षाओं से मेल खाती है (व्यवस्था 4:2; 12:32; नीतिवचन 30:6)।

2. परमेश्वर और यीशु के साथ उनके सज़्बन्ध कौन बिगाड़ता है? [2 यूहन्ना 9 पढ़ें।] यीशु और परमेश्वर के साथ हमारे सज़्बन्ध को *कौन* प्रभावित करता है? [रिज़्त स्थान में ''आगे बढ़ जाता,'' ''मसीह'' और ''परमेश्वर'' भरें।] ''अपराध'' का अर्थ है ''आगे निकल जाना, सीमाओं का उल्लंघन।'' ऐसा करने वाले लोगों के पास परमेश्वर नहीं है।

अध्ययन शीट के पीछे बने चित्र पर ध्यान दें। यीशु ने सारी सच्चाई दे दी है। जो लोग उसकी शिक्षा के बाहर जाते हैं अर्थात चक्र से बाहर जाते हैं [चक्र के अन्दर से बाहर की ओर एक तीर खींचें। देखें पृष्ठ 168।] वे यीशु की शिक्षा को छोड़कर मनुष्यों की शिक्षा में जा रहे हैं, जो यह करते हैं उनमें पिता नहीं है। जो लोग ऐसा करते हैं वे यीशु की शिक्षा में बने रहते हैं उनके पास पिता भी है, और पुत्र भी।

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है? हमने सीखा है कि हमें यीशु की शिक्षा में बने रहना चाहिए। उसकी शिक्षा में कुछ जोड़ने या उसमें से कुछ निकालने का अधिकार हमें नहीं है।

अब भाग III में जाएं और ''मसीह की'' और ''मनुष्यों की'' के नीचे दी गई बातों के बारे में पूछें। यदि कोई यीशु के नाम से प्रार्थना करता है, यदि कोई अपनी आमदनी के अनुसार चंदा देता है, यदि कोई सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज में भाग लेता है, यदि वह

गाता है, और यदि वह सिखाता है, तो ज़्या वह यीशु की शिक्षा में कुछ जोड़ रहा है ? ज़्या वह यीशु की शिक्षा से कुछ घटा रहा है ?

यदि कोई मरियम से प्रार्थना करता है तो ज़्या वचन में कुछ जोड़ रहा है ? ज़्या वह उसमें से कुछ निकाल रहा है ? वह जोड़ रहा है, और यदि वह यीशु के नाम से प्रार्थना नहीं करता तो निकाल रहा है। यदि कोई प्रार्थना करते हुए धूप का इस्तेमाल करता है, तो वह वचन में जोड़ रहा है।

यदि कोई प्रभु भोज में केवल रोटी ही लेता है, तो ज़्या उसने कुछ निकाला है ? यदि वह दाख रस की जगह पानी का इस्तेमाल करता है, तो ज़्या उसने वचन में कुछ जोड़ा है या उसमें से कुछ निकाला है। सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज न खाने का अर्थ लिखे हुए में से निकालना है। यदि कोई सेब का रस या प्रभु भोज की रोटी पर मज़्खन आदि का इस्तेमाल करता है तो वह वचन की शिक्षा में जोड़ रहा है या उसमें से निकाल रहा है। ऐसी बात को ग्रहण नहीं करना चाहिए।

यदि कोई गाने में साज़ का इस्तेमाल करता है, तो वह प्रभु की आराधना में जोड़ रहा है। यदि गाने की जगह साज़ का इस्तेमाल हो रहा है तो इसका अर्थ यह है कि वचन में जोड़ा भी गया है और निकाला भी गया है।

यीशु कलीसिया का सिर है। सज़्पूर्ण आराधना वैसे ही होनी चाहिए जैसे नये नियम में उसकी शिक्षा है।

निष्कर्ष

इस पाठ में हमने उन सिद्धांतों पर विचार किया जो परमेश्वर की आराधना करने के लिए हमारी अगुआई के लिए ध्यान में रखे जाने आवश्यक हैं। परमेश्वर की आराधना करते हुए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमें उसे स्वीकार्य आराधना करने के लिए ज़्या करना आवश्यक है।

I. *ज़्या आप आराधना में वही कुछ करते हैं जो परमेश्वर चाहता है ?* परमेश्वर ऐसी आराधना चाहता है जो आत्मा और सच्चाई से हो। सारी सच्चाई यीशु के द्वारा पहुंची है और नये नियम के प्रेरितों और भविष्यवज़्ताओं द्वारा प्रकट की गई है। हमारे लिए यीशु की सारी आज्ञा को मानना आवश्यक है।

II. *ज़्या आप उन चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं जिन्हें परमेश्वर ठुकराता है ?* परमेश्वर मनुष्यों की रीतियों और आज्ञाओं को स्वीकार नहीं करता। वह केवल वही स्वीकार करता है जो यीशु ने सिखाया है। यदि हम मनुष्यों की शिक्षा के अनुसार परमेश्वर की आराधना करना चाहते हैं तो हमारी आराधना व्यर्थ है।

III. *आप मसीह की बातों के अनुसार करते हैं या मनुष्यों की शिक्षा के अनुसार ?*हमने सीखा कि यीशु चाहता है कि हम प्रार्थना करें, चंदा दें, हर सप्ताह प्रभु भोज लें, गाएं और सिखाएं। मनुष्यों ने इन बातों के साथ जुड़ी कई और रीतियां शामिल कर दी हैं और जो यीशु ने कहा था उसको बदल दिया है।

IV. *ज़्या आपने उसके वचन में जोड़ा या उसमें से कुछ निकाला है?* बाइबल सिखाती है कि हमें न तो उसमें कुछ जोड़ना चाहिए और न उसमें से कुछ निकालना चाहिए। मनुष्यों ने यीशु द्वारा दी गई आज्ञाओं में से कई बातें जोड़ दी हैं और कई निकाल दी हैं। परमेश्वर और मसीह को साथ रखने के लिए, हमें मनुष्यों के बनाए उन विकल्पों को *नहीं* मानना चाहिए।

व्यवस्था देने वाला केवल यीशु ही है (याकूब 4:12)। रीतियां बनाने और नियम बनाने का कोई मनुष्यों को अधिकार नहीं है। वह अधिकार केवल यीशु के पास है।

[अगले अध्ययन के लिए समय निश्चित कर लें।]

सुसमाचार प्रचार

एक बार एक बड़े सेल्समैन ने लिखा था, ''जब तक हम कुछ नहीं करते तब तक कुछ नहीं होता।'' निश्चय ही हमारे सुसमाचार प्रचार में तब तक कोई अच्छी बात नहीं घटती जब तक हम स्वयं करना नहीं चाहते।

''हमारा पड़ोसी न तो देहरहित आत्मा है कि हम उसके आत्मा से ही प्रेम करें न ही आत्मारहित देह कि हम केवल उसकी भलाई के लिए काम करें; वह समाज से अलग देह-आत्मा भी नहीं है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, जो मेरा पड़ोसी है और समाज में देह-आत्मा। इसलिए यदि हम अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करें जैसे परमेश्वर ने उसे बनाया, तो निश्चय ही हम उसकी भलाई के लिए अर्थात उसके आत्मा उसके शरीर और उसके समाज की भलाई के लिए चिंतित होंगे।''

जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट
वर्ल्ड इवेंजलाइज़ेशन में
''द ग्रेट कमांडमेंट ...
द ग्रेट कमीशन।''